सितंबर २०२५

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

एक बार भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के विद्यार्थी उनका जन्मदिन मनाने उनके यहाँ गए। डॉ. राधाकृष्णन ने विद्यार्थियों से कहा कि वे उनका जन्मदिन मनाने के बजाय अगर इस दिन को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाएँगे तो यह उनके लिए गर्व की बात होगी। बस, तब से लेकर आज तक पाँच सितंबर को 'टीचर्स डे' के रूप में मनाया जाता है और उस दिन टीचर्स को विशेष रूप से सम्मानित किया जाता है।

लेकिन हमारे लिए सिर्फ एक ही दिन 'टीचर्स डे' नहीं होता है। जो टीचर्स हमें गणित, विज्ञान, इतिहास या भाषा ही नहीं, बल्कि हमें जीवन जीना भी सिखाते हैं, क्या उन्हें सिर्फ एक ही दिन के लिए सम्मान दिया जाना चाहिए? हमारे दिल में सदैव उनके प्रति आदर और विनय रहना चाहिए।

चलो, इस अंक में देखते हैं कि टीचर्स के प्रति विनय कैसे रखना चाहिए? क्या पर्शिव, विहान और थनक उनके टीचर का विनय चूक गए थे? क्यों बेबी जिराफ़ को अपने टीचर पसंद नहीं थे? जिफ्फी ने कौन सी मूवी देखी? और उसकी स्टोरी क्या थी? आलू-चिली सिरीज़ में आगे क्या हुआ? पढ़ते हैं और जानते हैं।

\- डिम्पल मेहता

टीचर्स डे

अक्रम एक्सप्रेस

September, 2025
Year 13, Issue : 06
Conti. Issue No.: 150
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोनः ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2025, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

नदी किनारे गेम

मम्मी जिराफ़ आज बहुत गुस्से में थीं। वे इतनी गुस्से में थीं कि उन्होंने बेबी जिराफ़ को कान पकड़कर सौ बार उठक-बैठक करने की पनिशमेन्ट दी। बेबी जिराफ़ रोता जा रहा था और उठक-बैठक करता जा रहा था। उसने मम्मी से माफी माँगी। लेकिन वे कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थीं।

शाम को पापा जिराफ़ आए। उन्हें इस बात का पता चला। उन्होंने मम्मी जिराफ़ से ऐसा करने का कारण पूछा।

मम्मी जिराफ़ ने कहा, 'रोज़ स्कूल से छोटी-मोटी शिकायतें आती थीं। लेकिन आज तो रिपोर्ट कार्ड में ऐसा लिखा है कि तुम्हारे बेबी को ऊँचे पेड़ पर से पत्ते खाना नहीं आता है, लंबी छलांग लगाकर चलना नहीं आता है। अगर उसे इतने सामान्य काम नहीं आते तो वह स्कूल में करता क्या है?'

मम्मी जिराफ़ की बातें सुनकर पापा जिराफ़ सोच में पड़ गए। उन्होंने बेबी जिराफ़ को अपने पास बुलाया और प्यार से पूछा, ‘ऊँचे पेड़ के पत्तों तक कैसे पहुँचना है, क्या वह टीचर ने सिखाया था?’ बेबी जिराफ़ ने कुछ देर सोचकर कहा, ‘हाँ... लेकिन मुझे कुछ समझ में नहीं आया था।’ ‘तो तुमने फिर से पूछा था?’ पापा जिराफ़ ने पूछा।
‘नहीं रे नहीं। उस चश्मिश ब्लैक बफेलो से फिर से पूछते हैं तो वह गुस्सा हो जाती है।’ बेबी जिराफ़ ने थोड़ा हँसते हुए कहा। पापा जिराफ़ ने आँखें दिखाकर पूछा, ‘क्या टीचर को ऐसे बुलाना चाहिए?’
‘वह तो डैडी मेरे फ्रेन्ड्स ऐसा कहते हैं। मैंने तो आज ही आपके सामने कहा।’ बेबी जिराफ़ ने हँसी रोकते हुए कहा।

‘तुम्हारे फ्रेन्ड्स टीचर को ऐसे क्यों बुलाते हैं?’ पापा जिराफ़ ने पूछा। ‘टीचर हमसे कुछ पूछती हैं और अगर हमें नहीं आता तो गुस्सा करती हैं। होमवर्क भी डबल देती हैं। अगर होमवर्क नहीं करते हैं, तो पूरा दिन एक पैर पर खड़े रहने की पनिशमेन्ट देती हैं। हम कुछ कहते हैं तो वे सुनती ही नहीं और जेनी पिग, मेरी शीप और कीकी गोट कुछ भी कहते हैं तो उनकी बात तुरंत मान जाती हैं। फिर तो हम उन्हें ऐसे नाम से ही बुलाएँगे न!’ बेबी जिराफ़ ने अपना बचाव करते हुए कहा।

पापा जिराफ़ को सारी बात समझ में आ गई। वे बेबी जिराफ़ को नदी किनारे ले गए और कहा, ‘चलो, आज हम एक गेम खेलते हैं।’ बेबी जिराफ़ को आश्चर्य हुआ। इस समय गेम! उसे तो लगा कि टीचर का नाम बिगाड़ने पर पापा जिराफ़ गुस्सा करेंगे। लेकिन उन्होंने इस बारे में कुछ नहीं कहा।

पापा जिराफ़ ने पलाश के पेड़ का एक बड़ा सा पत्ता लिया। उसमें पानी भरा और बेबी जिराफ़ से कहा, 'इस पत्ते में से जो पहले पानी पी लेगा वह जीत जाएगा।'
बेबी जिराफ़ ने कहा, 'यह तो मेरे लिए बहुत आसान है। इस गेम में तो मैं ही जीतूँगा।'

गेम शुरू हुआ। जैसे ही बेबी जिराफ़ पानी पीने जाता पापा जिराफ़ पत्ते को अपनी तरफ झुका देते और बेबी जिराफ़ की तरफ का पत्ता ऊँचा हो जाता। ऐसा चार-पाँच बार हुआ। बेबी जिराफ़ थोड़ा नाराज़ हो गया और बोला, 'इस तरह तो आप ही जीत जाओगे न। मेरी ओर का पत्ता ऊपर रहेगा तो मैं पानी कैसे पी सकता हूँ?'

'बिल्कुल सही बात है। मैं भी तुम्हें यही समझाना चाहता हूँ। जैसे पानी ऊपर से नीचे की ओर बहता है, वैसे ही ज्ञान का प्रवाह भी ऊपर से नीचे की ओर बहता है।

टीचर के प्रति विनय रखें, यानी कि हम टीचर को अपने से उच्च मानें तो उनके पास से ज्ञान हमारे पास आता है। टीचर को नीचा मानें, उनका मज़ाक उड़ाएँ तो ज्ञान उनके पास से हमारे पास कैसे आएगा? जैसे पानी नीचे से ऊपर नहीं बहता, वैसे ही ज्ञान भी नीचे से ऊपर नहीं बहता।'

बेबी जिराफ़ आगे कुछ कहे उससे पहले ही पापा जिराफ़ ने उसे धक्का मारा। वह गिर गया। उसे समझ में नहीं आया कि टीचर का नाम रखने पर गुस्सा होकर डैडी ने अब जाकर उसे धक्का क्यों मारा? वह पीछे मुड़कर डैडी से इस बारे में कुछ पूछता इससे पहले ही एक बड़ा पत्थर धम्म से नीचे गिरा। बेबी जिराफ़ ने रुआँसी आवाज़ में कहा, 'डैडी, सॉरी। मुझे कुछ देर के लिए आपके बारे में नेगेटिव विचार आ गया था।' 'तो फिर वह क्यों बदल गया?' पापा जिराफ़ ने पूछा।

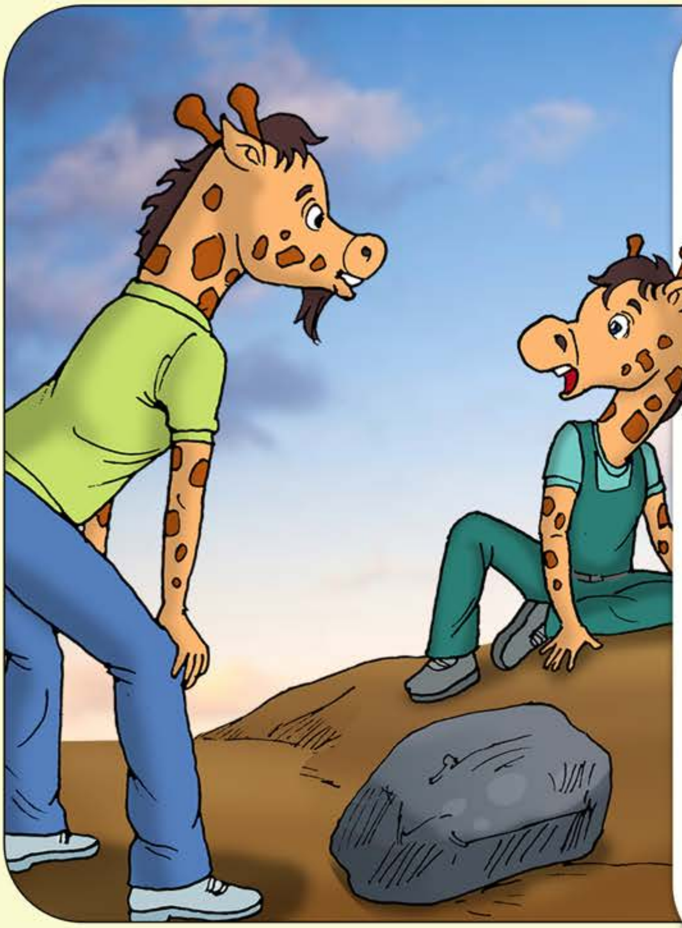

'क्योंकि आपने मुझे बचाने के लिए धक्का मारा था, इसलिए।' बेबी जिराफ़ ने प्रेम से कहा। 'तो फिर टीचर का गुस्सा भी मेरे धक्के जैसा ही है। अभी तुम्हें पता नहीं, इसलिए तुम उनके लिए नेगेटिव बोलते हो। टीचर भी तुम्हारे भले के लिए ही तुम पर गुस्सा करती हैं।' पापा जिराफ़ ने समझाया।

बेबी जिराफ़ ने मन में कहा, 'यह बात दूसरे टीचर्स के लिए सही हो सकती है। लेकिन हमारे चश्मिश ब्लैक बफेलो के लिए नहीं।' अगले दिन तय किए अनुसार बेबी जिराफ़ अपने दूसरे फ्रेन्ड्स और टीचर के साथ जंगल में स्थित झरने पर गया।

पानी देखकर बेबी जिराफ़ उसमें कूदने ही वाला था कि तभी टीचर ज़ोर से चिल्लाईं। आवाज़ सुनकर बेबी जिराफ़ वहीं रुक गया और धीरे से बोला, 'यहाँ भी गुस्सा?'

तभी जंगल के जानकार शिबु सियार ने आकर सबको सूचना दी, 'कोई भी इस झरने में नहाने मत जाना। चिकनी ज़मीन होने के कारण पानी में बह सकते हो। यह झरना सिर्फ देखने के लिए ही है।'

यह सुनकर बेबी जिराफ़ को पापा की बात याद आ गई कि टीचर तुम्हारे भले के लिए ही गुस्सा करती हैं। उसने मन ही मन निश्चय किया कि 'अब से मैं टीचर के प्रति विनय रखूँगा। उनके नेगेटिव देखने के बजाय पॉज़िटिव ही देखूँगा।'

चलो खेलें...

बैग में कौन सी चीज़ कहाँ रखनी है उसे ढूँढिए।

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : जब मेरे फ्रेन्ड्स टीचर का मज़ाक उड़ाते हैं तो मुझे भी हँसी आ जाती है। तो उस समय क्या करना चाहिए?

पूज्यश्री : आपको टीचर का मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए। आपको टीचर से ज्ञान ग्रहण करना है। टीचर कितनी मेहनत करके, खुद सारी तैयारी करके आपको सिखाते हैं, पढ़ाते हैं। तो फिर आप उनका मज़ाक कैसे उड़ा सकते हो?

नियम क्या है? कि ज्ञान का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर बहता है। उदाहरण के तौर पर, एक ट्रे में पानी है। (ट्रे को अपनी ओर झुकाएँगे तो) पानी ऊपर से नीचे की ओर आएगा और अगर हम ट्रे को (अपनी ओर से) ऊँचा रखेंगे तो? पानी हमारी ओर नहीं आएगा। ऐसे ही टीचर के प्रति विनय रखने से ज्ञान का प्रवाह हमारे अंदर आता है। टीचर से आशीर्वाद प्राप्त होता है और बिना किसी प्रयास के हमें ज्ञान समझ में आने लगता

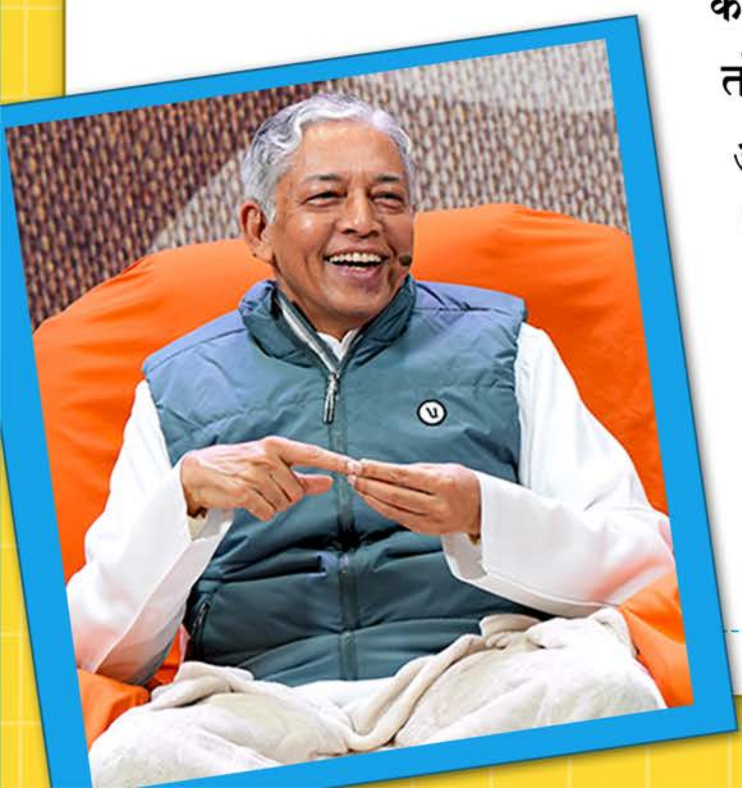

है। उनके थोड़ा सा समझाने पर भी हमें बहुत सारा समझ में आ जाता है। यदि आप मज़ाक उड़ाते हो तो आपने ज्ञान के प्रवाह को रोक दिया। वे जो ज्ञान देना चाहते हैं उस ज्ञान का अंतराय डाल देते हो अर्थात् वह ज्ञान प्राप्त करने में आपको परेशानी होगी।

प्रश्नकर्ता : टीचर का विनय चूक गए किसे कहा जाएगा?

पूज्यश्री : उनकी गलती निकालें, उनके दोष देखें, उनका मज़ाक उड़ाएँ, उन्हें कुछ टाइटल दें, ये सब विनय चूकना कहा जाएगा और यदि टीचर ने होमवर्क ज्यादा दिया हो तो उनके लिए बुरा नहीं बोलना चाहिए। आपसे जितना हो सके उतना करो, पूरा नहीं कर पाए तो बाकी का दूसरे दिन करना। लेकिन खराब भाव नहीं करना चाहिए। खराब भाव करना अर्थात् विनय चूका कहा जाएगा और विनय चूकते हो तो किसी और का नुकसान नहीं करते, खुद का ही सुख चला जाता है। खुद की समझ कम होती जाती है।

आखिरी दिन

आज सरला टीचर का स्कूल में आखिरी दिन था। कल से वे स्कूल नहीं आएँगी। वे अपने परिवार के साथ हमेशा के लिए दूसरे शहर में रहने जा रही थीं। स्कूल के सभी बच्चों और शिक्षकों की आँखें नम थीं, सिवाय पर्शिव, थनक और विहान के। वे तीनों उनके जाने से खुश थे।

पर्शिव ने कहा, 'कल हम पार्टी करेंगे।'

उसकी बात से सहमत होते हुए थनक बोली, 'हाँ! जब से टीचर ने हमें पनिश किया है, तब से ही मैं उनके जाने का इंतजार कर रही थी।'

'अरे, उस दिन को याद भी मत करो। मैं याद करता हूँ तो मुझे टीचर पर गुस्सा आ जाता है। आज तक किसी भी टीचर ने हमें इतनी छोटी सी बात के लिए इतना बड़ा पनिशमेन्ट नहीं दिया। ठीक है, एक-दो दिन क्लास में आने में देरी हो गई,

लेकिन इसके लिए कोई ऐसा पनिशमेन्ट थोड़ी ही देता है! उस दिन पूरी क्लास हम पर हँस रही थी।' पर्शिव ने उग्र स्वर में कहा।

विहान बोला, 'अब छोड़ो उस बात को। खुशी के दिन हम क्यों ऐसी बात को याद करें?' कल से हम बिल्कुल फ्री!'

कल कितना मज़ा आएगा! ऐसा सोचते-सोचते तीनों मित्र प्रिन्सिपल सर के ऑफिस के पास से गुज़रे। प्रिन्सिपल सर के ऑफिस से एक जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई दी। पर्शिव के कदम वहीं रुक गए। ऑफिस के अंदर झाँका तो पर्शिव के दिल की धड़कनें बढ़ गईं।

'डैड यहाँ?' थनक और विहान भी पर्शिव के डैड को देखकर घबरा गए। तीनों ने सोचा कि सरला टीचर ने ही शिकायत करने के लिए पर्शिव के डैड को बुलाया होगा। पर्शिव ने धीमी आवाज़ में थनक और विहान से कहा, 'आज आखिरी दिन है। आज तक मैंने जितनी भी शरारते की हैं, टीचर वह सब डैड को बता देंगी और मेरे डैड तुम्हारे पेरेन्ट्स को बता देंगे। मैं स्कूल में मोबाइल लाया था, वह भी कह देंगी।'

तीनों को टीचर पर और अधिक गुस्सा आया।

थनक ने कहा, 'अब जो भी हो। हम प्रेयर हॉल में चलते हैं। सब ऐसा कह रहे हैं कि वहाँ

सबके लिए सरप्राइज़ है।'

'सरप्राइज़ तो दूसरों के लिए होगा। हमारे लिए नहीं!' पर्शिव ने मुँह बिगाड़ते हुए कहा। पर्शिव सुनना चाहता था कि सर के ऑफिस में क्या बात चल रही है। लेकिन थनक और विहान उसे खींचकर हॉल की तरफ ले गए।

हॉल में आठवीं कक्षा के सभी बच्चों के फोटोज़ लगे हुए थे। फोटोज़ के नीचे टीचर ने बच्चों के साथ बिताए यादगार पल के बारे में लिखा था। हॉल में देखा कि एक जगह पर बहुत सारे बच्चे इकट्ठा हुए थे। दूर से वहाँ अपने फोटोज़ देखकर पर्शिव बोला, 'जाते-जाते भी टीचर ने

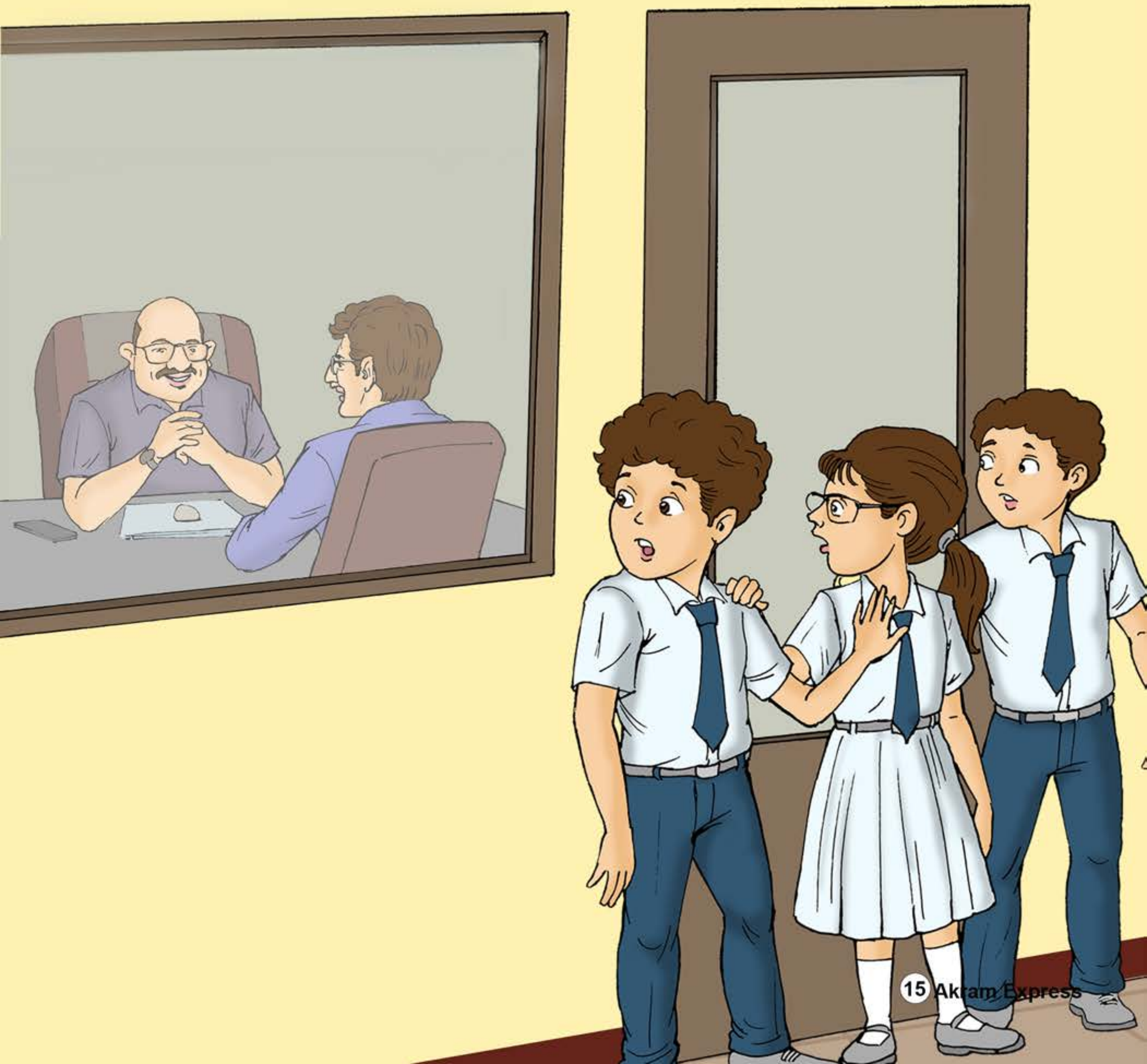

हमारे बारे में कुछ ऐसा लिखा होगा कि जो हमें पहचानते नहीं हैं, वे भी हमारे बारे में गलत सोचेंगे!'

'काश! सरला टीचर ने हमारे बारे में भी ऐसा लिखा होता! लेकिन तुम तीनों लकी हो।' एक लड़की वहाँ से गुज़रते हुए बोली।

तीनों बच्चे आगे जाने के बजाय वहीं खड़े रह गए। तभी दो-चार बच्चे उनके पास आए और तीनों को बधाई दी।

तीनों को कुछ समझ में नहीं आया। वे एक-दूसरे के सामने देखने लगे। पर्शिव ने कहा, 'चलो, चलकर देखें तो सही कि सबके प्रिय टीचर ने क्या लिखा है?'

तीनों बच्चे अपनी फोटोज़ के पास गए।

तीनों के फोटोज़ के पास लिखा था 'मुझे टीचर का नया अर्थ

समझाने के लिए मैं तुम लोगों की आभारी रहूँगी।'

तीनों एक-दूसरे की ओर देखने लगे। पर्शिव ने आगे पढ़ा, 'टीचर नहीं बनने की इच्छा के साथ मैं इस स्कूल से जुड़ी थी। लेकिन हर टॉपिक पर तुम्हारे प्रश्नों के जवाब ढूँढ़ते-ढूँढ़ते कब मैं अच्छा पढ़ाने लगी मुझे पता भी नहीं चला। पढ़ाई के प्रति तुम लोगों का उत्साह देखकर ही मुझे पढ़ाने में आनंद आता था। तुम लोग मेरे निडर और प्रिय विद्यार्थी हो। आगे पढ़ाई के लिए जब भी मेरी ज़रूरत हो तब मुझे याद करना।'

इतना पढ़ते ही थनक की आँखों में आँसू आ गए। पर्शिव और विहान की आँखें भी नम हो गईं।

कोई भी टीचर इन तीनों को अपनी क्लास में पढ़ाने के लिए तैयार नहीं थे। तब सरला टीचर ने खुद आगे आकर इन्हें पढ़ाने की तैयारी दिखाई थी। बात-बात में प्रश्न पूछने की उनकी आदत के कारण

उनसे दूर भागते दूसरे टीचर्स की तुलना में सरला टीचर ने कभी भी उन्हें डाँटा नहीं था और उनके सभी प्रश्नों के जवाब दिए थे।

थनक बोली, 'मुझे साइन्स का सब्जेक्ट पसंद भी नहीं था। लेकिन सरला टीचर के कारण मुझे पसंद आने लगा। उन्होंने खेल-खेल में साइन्स की कठिन बातें समझा दीं!'

विहान बोला, 'और इसी वजह से तो साइन्स की एग्ज़ाम में तुम्हें इतने अच्छे मार्क्स मिले। टीचर ने मुझे भी बहुत हेल्प की है। सरला टीचर के कारण ही तुम मेरे अच्छे फ्रेन्ड्स बने। याद है, जब पूरा क्लास मेरा मज़ाक उड़ा रहा था तब टीचर ने वह वाला प्रोजेक्ट दिया था, जिसमें सभी को एक-दूसरे की पॉज़िटिव बात लिखनी थीं? मेरे बारे में पॉज़िटिव बातें पढ़कर मेरा आत्मविश्वास बढ़ा और क्लास में भी सबने मेरा मज़ाक उड़ाना बंद कर दिया। उसके बाद ही हम फ्रेन्ड्स बने।'

टीचर का पॉज़िटिव याद करते ही तीनों के दिल में टीचर के प्रति आदर भाव उत्पन्न हुआ। अपनी भूल पर पछतावा भी हुआ।

हमने टीचर के लिए कितना बुरा सोचा! वास्तव में तो गलती हमारी ही थी न? एक-दो

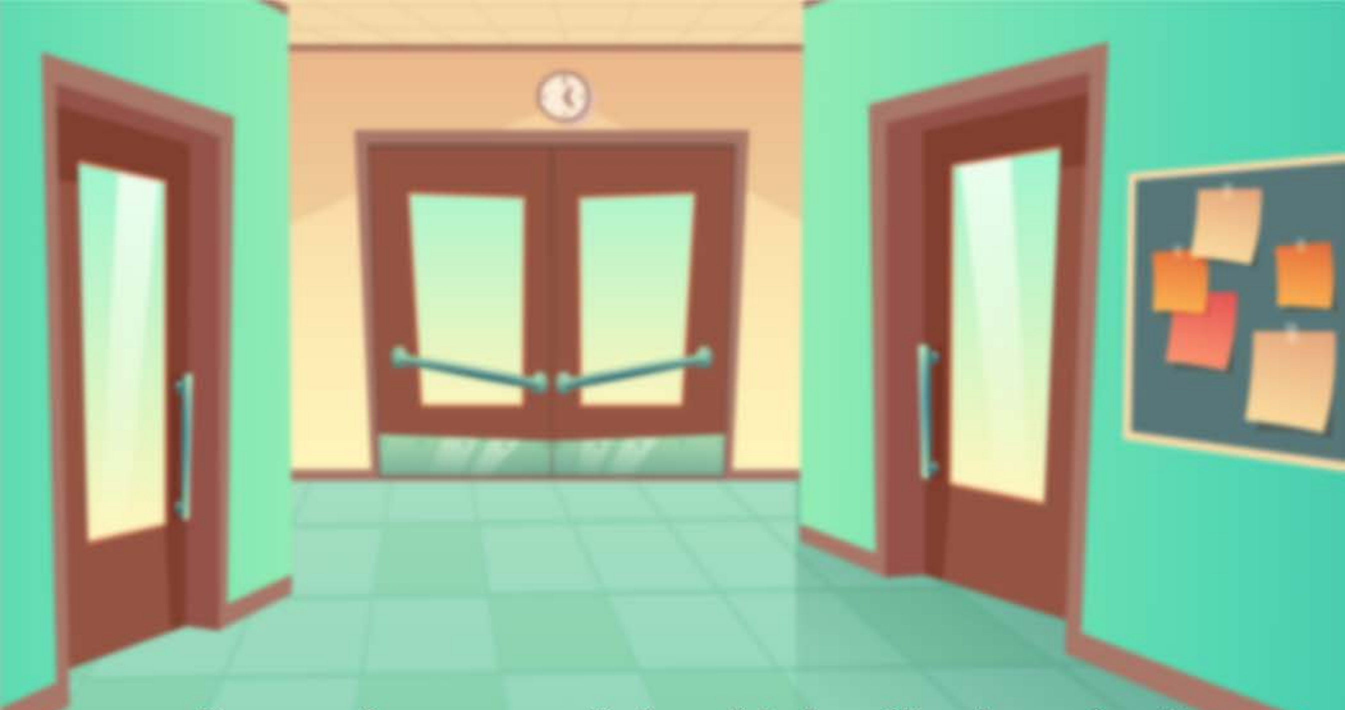

बार नहीं, हम कई बार क्लास में लेट पहुँचे थे। पर्शिव ने गलती स्वीकार करते हुए कहा, 'टीचर ने हमें एक ही बार पनिश किया और हम फिर कभी लेट नहीं हुए हैं। टीचर ने मुझे दो-तीन बार मोबाइल के साथ पकड़ा था। लेकिन डाँटने के बजाय, उन्होंने मुझे मोबाइल का सही उपयोग करना सिखाया था।'

तभी पर्शिव की नज़र प्रेयर हॉल के बाहर सरला टीचर पर पड़ी। साथ में उसके डैडी और प्रिन्सिपल सर भी थे। लेकिन उसे दूसरा कोई नहीं दिखा और वह दौड़ता हुआ टीचर के पास गया। पीछे-पीछे विहान और थनक भी गए।

बच्चों के रुआँसे चेहरे देखकर टीचर ने प्यार से पूछा, 'क्या हुआ बच्चों? सब ठीक तो है न?'

'थैंक यू टीचर!' पर्शिव बस इतना ही कह सका। विहान और थनक ने भी धीमी आवाज़ में टीचर को थैंक यू कहा।

टीचर के चेहरे पर स्माइल आ गई।

'यदि मेरा आभार मानना हो तो पर्शिव के डैडी ने हमारे स्कूल के

लिए जो नई साइन्स लेबॉरटरी बनाई है, उसमें अच्छे-अच्छे साइन्स के प्रयोग करना।' टीचर ने हँसते हुए कहा।

तीनों को पर्शिव के डैडी के स्कूल आने का असली कारण समझ में आया और टीचर के बारे में गलत सोचने पर फिर से पछतावा हुआ।

'और हाँ, साइन्स के प्रयोग तो हर साल बदलते रहेंगे। लेकिन लाइफ में उस प्रयोग को हमेशा चालू ही रखना। याद है न, कौन सा?' टीचर ने पूछा। तीनों चुप रहे।

'हमेशा सबका पॉज़िटिव देखना। और बस, इसी तरह हँसते-खेलते रहना।' टीचर ने प्यार से कहा।

'हाँ टीचर, वह वाला प्रयोग तो हम कभी नहीं भूलेंगे।' विहान और पर्शिव ने कहा। थनक ने तुरंत कहा, 'और आपको भी!'

My Creation

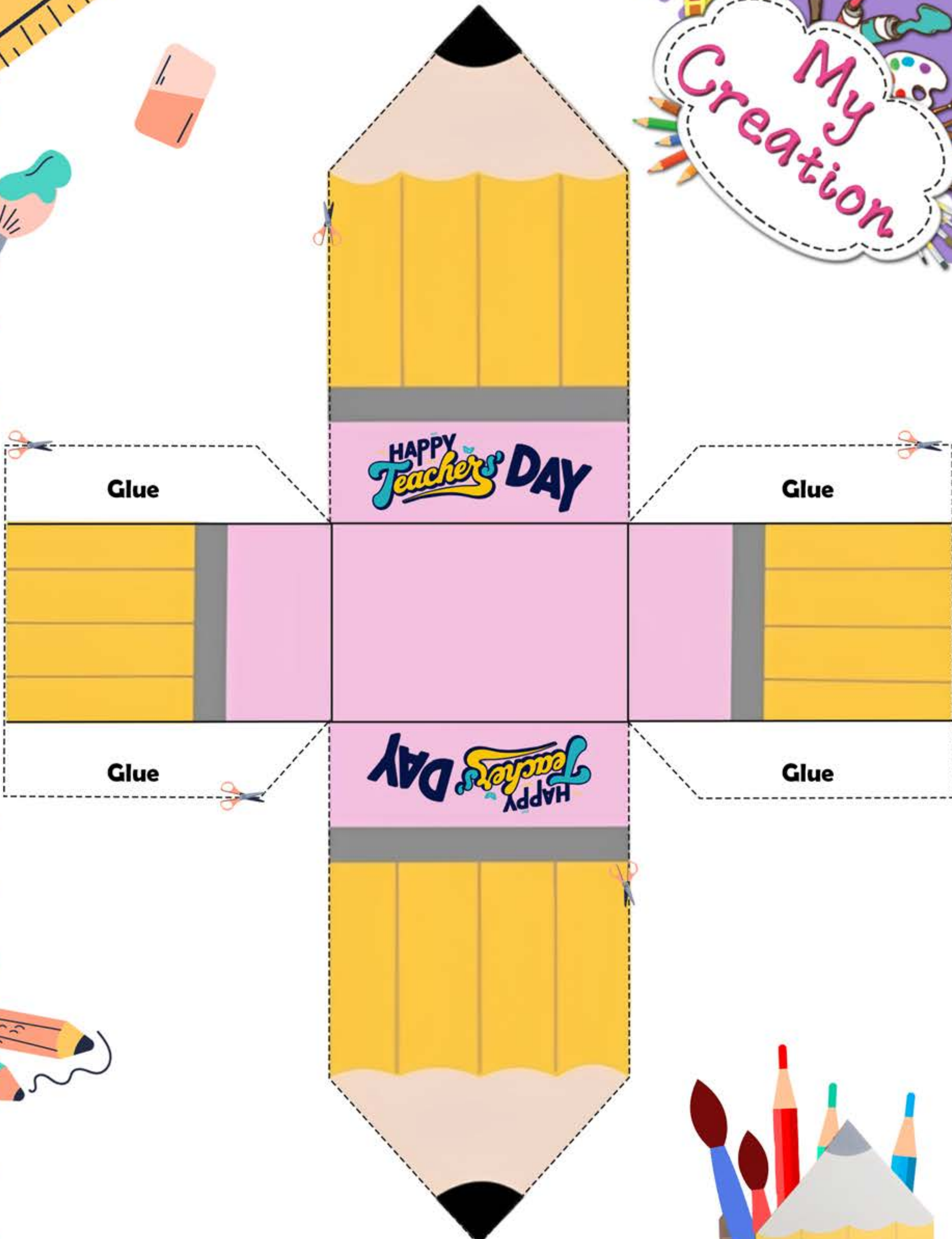

दिए गए चित्र का प्रिन्ट निकालें और उससे पैन स्टैन्ड
बनाकर टिचर्स डे पर अपने टिचर को गिफ्ट दें।

डीडीमा जंगल में तालाब के किनारे जिफ्फी अकेला बैठा रो रहा था। तभी रिज़ो, ज़ोई और थीओ उसके पास आए।

'अरे जिफ्फी, इसमें रोने की क्या बात है? किसी को मूवी देखने को मिले तो वह थोड़े ही रोने बैठता है! प्लीज़, रोना बंद करो।' ज़ोई ने जिफ्फी को समझाने की कोशिश की।

'लेकिन, मुझे अकेले ही मूवी देखनी पड़ेगी। तुम में से कोई भी मेरे साथ नहीं है।' जिफ्फी बोला।

'लेकिन, मूवी देखने के बाद तुम कैफ़े में आकर हमें मूवी की स्टोरी बता देना। सुना है कि मूवी में किसी टीचर की लाइफ स्टोरी है। तुम सारे पॉइन्ट्स लिख लेना और फिर हमें बताना!' थीओ ने कहा।

जिफ्फी मान गया। उसने आँसू पोंछे और कहा, 'ओके! ऐसा करते हैं।' ऐसा कहकर वह खुले आकाश के नीचे हरी-भरी घास पर खुली हवा में मूवी देखने बैठ गया। बात यह थी कि 'टीचर्स डे' के दिन डीडीमा जंगल के तालाब के किनारे एक मूवी देखने का आयोजन

किया गया था। लेकिन जिफ्फी के सिवाय सभी काम में व्यस्त होने के कारण जा नहीं सकते थे। सभी ने रात को थीओ के कैफ़े पर मिलने का तय किया।

जिफ्फी को मूवी इतनी पसंद आई कि उससे कहानी सुनाने का इंतजार भी नहीं हो रहा था। जैसे ही सब कैफ़े पर मिले, जिफ्फी ने कहानी सुनाना शुरू किया:

‘यह कहानी...’, कहते-कहते जिफ्फी रुक गया। उसने अपनी बुक खोली और नाम पढ़ा, “जैमी एस्कलन्ट” की है। वे बोलिविया देश के रहने वाले थे। वे जब अमेरिका आए तब उन्हें अंग्रेजी नहीं आती थी। उन्होंने धीरे-धीरे अंग्रेजी सीख ली। उन्हें गणित पढ़ाना बहुत अच्छा लगता था। उन्होंने एक स्कूल में शिक्षक की नौकरी शुरू की।

उस स्कूल के बच्चों का पढ़ाई से दूर-दूर तक नाता नहीं था। बच्चों को पढ़ना बिल्कुल पसंद नहीं था। उस स्कूल के कई बच्चों ने तो पढ़ाई करना बिल्कुल छोड़ दिया था। अब ऐसे बच्चों को गणित जैसा विषय पढ़ाना यानी कितना कठिन काम! लेकिन जैमी सर को बच्चों के टैलन्ट पर पूरा भरोसा था। उन्हें लगता था कि बच्चे पढ़ाई में अच्छा कर सकें ऐसे हैं। सिर्फ उन्हें सही मार्गदर्शन की ज़रूरत है।

बच्चों को गणित का विषय अच्छी तरह समझाने के लिए उन्होंने कई अलग-अलग तरीके अपनाए। हँसी-मज़ाक में, कहानियाँ सुनाकर और तरह-तरह के प्रयोग करके वे उन्हें गणित सिखाते थे। बच्चों का

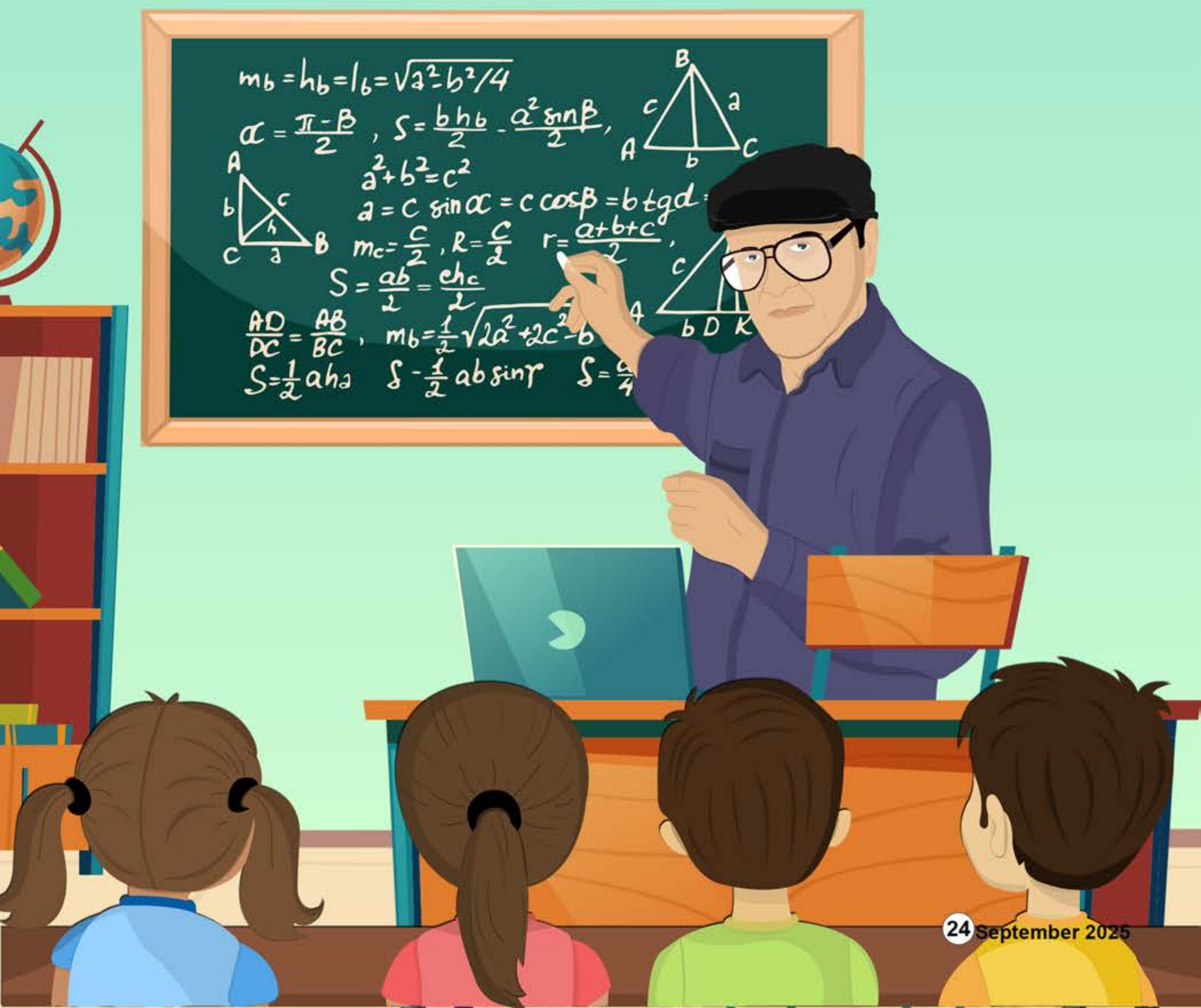

पढ़ाई में मन लगे इसलिए वे बच्चों के लिए नाश्ता भी लेकर आते। बच्चों को जैमी सर के पास पढ़ने में इतना मज़ा आने लगा कि स्कूल के पहले, स्कूल के बाद और समर वेकेशन में भी वे उनसे पढ़ने जाते। बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए वे बार-बार कहते कि 'बस, निश्चय पक्का होना चाहिए। मेहनत और पक्के निश्चय से सफलता मिलती ही है।'

बच्चों ने इतनी मेहनत की कि जैमी सर के क्लास के अठारह विद्यार्थियों ने नैशनल स्तर पर होने वाली गणित की बहुत कठिन परीक्षा पास कर ली। 'इतना अच्छा रिज़ल्ट असंभव है' ऐसा सोचकर कुछ अधिकारियों ने चीटिंग का आरोप भी लगाया। लेकिन निराश होने के बजाय जैमी सर ने बच्चों को फिर से परीक्षा देने के लिए प्रोत्साहित किया। विद्यार्थियों ने फिर से परीक्षा दी और फिर से पास हुए।

और इस तरह, जैमी सर ने उनके विद्यार्थियों की क्षमता पर इतना अधिक भरोसा रखा कि बच्चों का जीवन ही बदल गया। कहते-कहते जिफ्फी रो पड़ा।

ज़ोई ने जिफ्फी को टिशू दिया और अपनी आँखें भी पोंछी। थीओ ने रिज़ो को ब्राउनी दी और मन ही मन अपने टीचर्स को याद करके 'हैपी टीचर्स डे' कहा और एक दूसरी ब्राउनी खुद खाने लगा।

यह तो नई ही बात है!

पॉज़िटिव देखो, पॉज़िटिव को एप्रीशिएट (प्रशंसा) करो, तो विनय उत्पन्न होगा ही।

ऐसा काम करना जिससे गुरु प्रसन्न हों, तो गुरु के प्रति विनय रखा कहा जाएगा।

यदि अविनय हो जाए तो प्रतिक्रमण करना और निश्चय करना कि 'मुझे विनय नहीं चूकना है।'

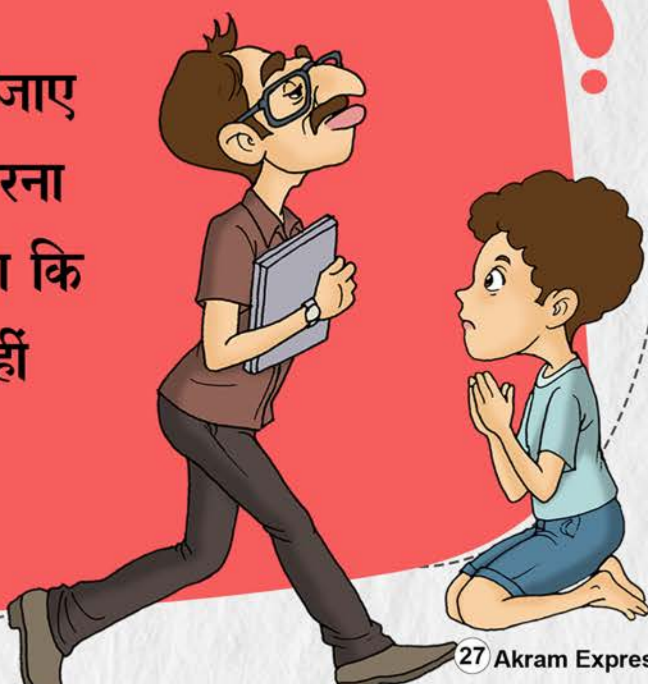

अब तक की आलू-चिली की कहानियाँ एक साथ पढ़ने के लिए...
Click Here
https://dbf.adalaj.org/TdY6ZhXI

चिली आलू से बहुत नाराज़ है। उसे ऐसा ही लगता है कि उसके बेस्ट फ्रेन्ड ने उसका साथ नहीं दिया इसलिए वह हार गया। आलू उसे बताना चाहता है कि असल में हुआ क्या था। अब आगे...

मैंने चिली से कहा, 'सॉरी चिली, तुम मेरी बात सुनो न... मैं तुम्हें बताता हूँ...' इससे पहले कि मैं चिली को अपनी बात कहता, उसे समझा पाता, पार्सली बीच में कूद पड़ा, 'आप क्यों सॉरी कह रहे हो? उसका खराब न दिखे इसलिए आपने सबसे ऐसा कहा है कि उसने कोको को जीतने दिया। सॉरी तो उसे आपसे कहना चाहिए!'

मुझे लगा, ये पार्सली गलत टाइम पर गलत बात बोल रहा है।

यह सुनकर चिली एकदम से गुस्सा होकर बोला, 'मैंने सॉरी कहने के लिए नहीं कहा था। इसे कहना ही था तो ऐसा कहना था कि मैंने अपने बेस्ट फ्रेन्ड को चियर करने के बजाय पराये लोगों को प्रोत्साहित किया। मैंने चिली का आत्मविश्वास तोड़ने की कोशिश की। मैंने आखिरी मोमेन्ट पर उसके साथ फ्रेन्ड्शिप तोड़ दी!'

क्या? चिली क्या बोल रहा है? मैंने उसके साथ फ्रेन्ड्शिप तोड़ दी? मैंने उसका आत्मविश्वास तोड़ दिया?

लेकिन चिली यहीं पर नहीं रुका। उसने आगे कहा, 'तुम छोटे थे तब से मैंने कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ा। जब सब लोग तुम्हें कहते थे कि तुम स्केटिंग नहीं कर पाओगे, तब भी मैंने कभी तुमसे ऐसा नहीं कहा कि तुम नहीं कर पाओगे! तुम इतने मोटे हो कि तुम जो स्केट्स पहनते थे, वे स्केट्स टूट जाते थे। तब मैंने सुगरी से कहकर तुम्हारे लिए स्पेशल स्केट्स बनवाएँ! आज सभी 'आलू-आलू' करते हैं। लेकिन उस समय तो कोई तुम्हारे सामने भी नहीं देखता था। तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?'

चलो अच्छा है... चिली ने सामने से मुझे पूछा कि मैंने ऐसा क्यों किया। अब मैं उसको बताऊँगा तो वह समझ जाएगा।

मैं कुछ कहूँ उससे पहले ही पार्सली बोला, 'तुम आलूभाई के साथ इस तरह क्यों बात कर रहे हो? वे तुम्हें बेस्ट फ्रेन्ड मानते हैं और तुम?'

चिली रोते-रोते बोला, 'अब आलू मेरा बेस्ट फ्रेन्ड नहीं है! मैं उसे कब से कह रहा हूँ कि मेरे पूरे शरीर में जलन हो रही है। लेकिन मेरे साथ बात कलने के लिए उसके पास टाइम ही कहाँ है। अब मुझसे मिलने या मेले थात टिली सेक पीने टभी मट आना।'

ऐसा कहकर चिली वहाँ से चला गया। मुझे लगा कि क्या चिली ने मेरे साथ फ्रेन्ड्शिप तोड़ दी? मेरी बात भी नहीं सुनी?

मैं आँखें पोंछते हुए पीछे मुड़ा तो देखा कि थीओ, उसके फ्रेन्ड्स और कोको खड़े-खड़े हमारी बातें सुन रहे थे। जिफ्फी चिली से भी ज्यादा ज़ोर से रो रहा था। बाकी सब की आँखों में भी आँसू आ गए थे। सिवाय एक... पार्सली... पार्सली चिली से भी ज्यादा लाल हो गया था। वह गुस्से में और अधिक नुकसान कर देगा तो? लेकिन इससे ज्यादा तो क्या नुकसान होगा। फ्रेन्ड्शिप तो चिली ने तोड़ ही दी।

पार्सली गुस्से में क्या करेगा? क्या चिली कभी भी आलू के साथ बात नहीं करेगा? आलू चिली से क्या कहने वाला था? क्या सचमुच आलू के विश्वास के आगे पार्सली का डर भारी पड़ गया?

Me & Mummy

मम्मी और बच्चों ने साथ मिलकर एक ऐसा इवेन्ट सेलिब्रेट किया, जिसमें बच्चों ने अपनी मम्मी की गोद में लेटकर अक्रम एक्सप्रेस की कहानी सुनी!! और जाने कहानी के फायदे एक्सपर्ट से। सबने तय किया कि रोज़ सोते वक्त अक्रम एक्सप्रेस की कहानी सुनेंगे।

देखना कहीं आप चूक न जाएँ, तो आज ही डाउनलोड करें अक्रम एक्सप्रेस की ऑडियो स्टोरी!